International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 19-12-2021, Accepted: 04-01-2022, Published: 20-01-2022
Volume 8, Issue 1, 2022, Page No. 32-33

रीवा जिले के माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं द्वारा पढाये गये विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

उमेश कुमार सिंह[1], सुरेन्द्र कुमार त्रिपाठी[2]
[1] अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत
[2] सहायक प्राध्यापक, शा० शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
शोधार्थी द्वारा रीवा जिले के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धिका अध्ययन किया गया है, इसके लिए कुल 45 विद्यालयों से कुल 900 ग्रामीण एवं कुल 900 शाहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है। अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा स्वयं उपलब्धि परीक्षण के निर्माण किया गया है। उपलब्धि परीक्षण को पूरे विद्यार्थियों पर प्रशासित कर प्रयोगात्मक विधि द्वारा आकडों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। शिक्षिकाओं द्वारा पढाये गये 900 तथा शिक्षकों द्वारा पढाये गये 900 विद्यार्थियों के उपलब्धि परीक्षण के विश्लेषण मे यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि दोनो ही समूहों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर है। अर्थात शिक्षकों द्वारा पढाये गये विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि शिक्षिकाओं द्वारा पढाये गये विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि से बेहतर है।

मूल शब्दः शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं, विद्यार्थियों, शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन

प्रस्तावना
शिक्षक ही हैं जिन्हे हमारी भारतीय संस्कृति में माता–पिता के बराबर दर्जा दिया जाता है क्योंकि शिक्षक हमे समाज में रहने योग्य बनाता है, इसलिये शिक्षक को समाज का शिल्पकार कहा जाता है शिक्षक का संबंध विद्यार्थी को शिक्षा देने से ही नही होता बल्कि वह अपने विद्यार्थी को हर मोड़ पर उसको राह दिखाता है।

शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालय, महाविद्यालयों) में सुनियोजित ढंग से चलने वाली एक सोदेश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा विद्यार्थी निश्चित पाठयक्रम को पढ़कर संबंधित परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है।

शोधार्थी ने इस शोध में आवश्यकता महसूस की कि क्या माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा के लिये शिक्षकों (पुरूषों) से अधिक उपयुक्त होने के कारण ही शिक्षिकाओं (महिलाओं) की अधिक मांग हुई है।

शिक्षिकाओं के रूप में कार्य करने वाली महिलायें उसी नगर या ग्राम में नौकरी चाहती हैं, जिसमे वे निवास करती हैं, इसका कारण यह भी है कि अन्य स्थानों में उनको सुरक्षा, आवास आदि की सुविधायें प्राप्त होना कठिन होता है। दूसरा कारण यह भी होता है कि यदि वे अविवाहित हैं तो उनके अभिभावक उनको अन्य स्थानों में नौकरी करने की अनुमति नही देते हैं।

शोध के उद्देश्य
शोधार्थी द्वारा शोध के निम्नलिखित उद्देश्य का चयन किया गया है–

1. शिक्षकों एवं शिक्षकाओं द्वारा माध्यमिक कक्षाओं के पढाये गये विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

परिकल्पना
शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया गया है–

1. शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं द्वारा पढाये गये विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व
शोधार्थी के विचार से शिक्षा में मानव संसाधन अधिकतर पूर्व जैसे ही है, एक परिवर्तन बहुत ही विशाल परिलक्षित हुआ है, वह है ''शिक्षा विभाग में शिक्षिकाओं की बढ़ी हुई संख्या'' शिक्षा विभाग में यदि वर्तमान की तुलना पिछले कई वर्षो के मानव संसाधन से की जाय तो ऐसा प्रतीत हो रहा है कि शिक्षिकाओं की संख्या बहुत ज्यादा बढ़ी है। क्या इसका कारण यह है कि ''विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास को दिशा देने के लिये कठोरता की अपेक्षा कोमलता की आवश्यकता होती है। नारी कोमलता की मूर्ति है, वात्सल्य की अक्षय निधि है एवं विद्यार्थियों के जीवन के लिये स्वयं का उत्सर्ग कर देने वाली ममतामयी प्राणी है। अतः क्या वह माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षा स्तर के लिये पुरूष शिक्षकों (नर) से अधिक उपयुक्त है।''

प्रस्तुत शोध के संबंध में शोधार्थी के अनुसार इस शोध का महत्व इसलिये भी है कि यदि शिक्षिकाओं के कारण माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अच्छा रिजल्ट आता है, उनके कारण विद्यार्थियों के शिक्षा स्तर में काफी प्रगति हो रही है, तो शिक्षा विभाग में ज्यादा से ज्यादा शिक्षिकाओं को लाने का प्रयास किया जा सकेगा।

परिसीमन
शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन हेतु रीवा जिले के 9 विकास खण्डों का चयन किया गया है।

न्यादर्श
शोधार्थी द्वारा न्यादर्श चयन निम्नानुसार किया गया है–

1. रीवा जिले के 900 ग्रामीण तथा 900 शहरी विद्यार्थी
2. रीवा जिले की शिक्षिकाओं तथा शिक्षको द्वारा पढाये गये 900–900 विद्यार्थी

उपकरण

शोधार्थी द्वारा स्वदृ निर्मित उपलब्धि परीक्षण जिससे कुल 2–2 अंक के 20 प्रश्न, इस प्रकार कुल पूर्णांक 40 है।

व्याख्या

ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष शिक्षकों द्वारा पढाए गए विद्यार्थियों के प्राप्तांको का समान्तर माध्य 12.7 तथा ग्रामीण क्षेत्र के महिला शिक्षकों द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों के प्राप्तांको का समान्तर माध्य 12.07 है। दोनो समूहो का क्रांतिक अनुपात 1.16 पाया गया है। स्वतंत्रता की कोटि 898 के 0.05 के विश्वास स्तर पर t– मान 1. 96 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर ज– मान 2.58 है। ये दोनो ही t– मान गणना से प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान 1.16 से अधिक है। अतः सिद्ध होता है उक्त दोनों स्तरों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नही है। अर्थात ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष शिक्षकों तथा ग्रामीण क्षेत्र के महिला शिक्षकों द्वारा पढाए गए विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही है। अतः शोधार्थी की परिकल्पना क्रमांक–4 ''ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष शिक्षक तथा महिला शिक्षक द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही है।'' स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

शिक्षकों द्वारा पढ़ाए गए विधार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि शिक्षिकाओं द्वारा पढाए गए विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से बेहतर पायी गयी है। और दोनो की शैक्षिक उपलब्धि मे सार्थक अन्तर परिलक्षित हुआ है।

सुझाव

शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये गये है

1. शिक्षिकों तथा शिक्षिकाओं में व्याप्त जेण्डर मानसिकता को समाप्त करने हेतु प्रशिक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित किया जाना उचित होगा क्योंकि महिला एवं पुरूष दोनो ही जेण्डर मानसिकता से ग्रसित होते है जिसके कारण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।
2. शिक्षिकाओं को अपने कर्तव्य के प्रति सचेत होने का प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे यह बताया जाना चाहिए कि उन्हें विधालयों एवं विधार्थियों के प्रति पुरूष के बराबर समर्पित होना उनके कर्तव्य की श्रेणी में आता है। उन्हें यह भी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए कि उनकी किसी भी व्यक्तिगत समस्या का भागीदार विधार्थी न हों। चुकि यह तथ्य प्रकाश में आया है कि महिलाओं के अपने निजी कार्यो में व्यस्तता के कारण पठन–पाठन प्रभावित होता है और शिक्षकों की अपेक्षा शिक्षिका के द्वारा पढ़ाए गए विधार्थियों का शैक्षणिक उपलब्धि स्तर कम पाया गया है।

संन्दर्भ सूची

1. सिंह, त्रिवेणी (1988), ''माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और सामाजिक आर्थिक स्थिति के संदर्भ में उनकी शिक्षण दक्षता का अध्ययन, पी०एच०डी० एज्यूकेशन अवध यूनिवर्सिटी।
2. शर्मा, आर०ए० (2011), ''शिक्षा अनुसन्धान'' विनय रखेजा आर० लाल बुक डिपो मेरठ ISO–9000–2008
3. कपिल, एच०के० (2012), ''अनुसन्धान विधियॉ'' राखी प्रकाशन आगरा ISBN–978–93–80346–70–0